Vagdhara: A Multilingual Peer Reviewed Research Journal (ISSN 2839-6197)
Vol. 1 No. 3 (2026): April-June; Website: https://vagdhara.in/index.php

राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में श्रद्धा का योगदान

***छोटे लाल प्रसाद**

*शोध छात्र, त्रिवेणीदेवी भालोटिया महाविद्यालय, रानीगंज, (काज़ी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल)

Received: September 13, 2026 *Accepted: November 07, 2026*

शोध सार

श्रद्धा का चरित्र जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' से लिया गया है। वह केवल एक प्रमुख पात्र के रूप में ही उपस्थित नहीं है, बल्कि उसके कार्य और आदर्श समकालीन समाज के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा को यहां प्रेम, विश्वास, करुणा, संवेदना और जीवन-समन्वय की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। राष्ट्र-निर्माण केवल राज्य या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों की सक्रिय सहभागिता की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य लोगों के बीच एकता, सहयोग, विश्वास और साझा पहचान को मजबूत करना है। नारी अपनी संवेदनशीलता, रचनात्मकता, सेवाभाव और नेतृत्व-क्षमता के माध्यम से राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। इस दृष्टि से श्रद्धा का चरित्र नारी की सृजनात्मक और समन्वयकारी भावना का प्रतिनिधित्व करती है।

बीज शब्द : वैज्ञानिक प्रगति, अकेलेपन और मानसिक द्वंद्व, राष्ट्र-निर्माण, नवचेतना, उपभोक्तावादी मानसिकता।

श्रद्धा का चरित्र जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' से लिया गया है। वह केवल एक प्रमुख पात्र के रूप में ही उपस्थित नहीं है, बल्कि उसके कार्य और आदर्श समकालीन समाज के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा को यहां प्रेम, विश्वास, करुणा, संवेदना और जीवन-समन्वय की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। डॉ. नंददुलारे वाजपेयी लिखते हैं कि — "कामायनी के चरित्रों के निर्माण में किसी रूढ़ि या परंपरागत व्यवस्था का हाथ नहीं है। मनु महाकाव्य के क्रमागत नायक की भाँति वीर चरित्र नहीं है। उसे हम वर्तमान संघर्षात्मक युग का प्रतिनिधि कह सकते हैं, जो जीवन के वैषम्यों से खिंचकर अनेक दिशाओं में दौड़ता है; किन्तु कहीं भी शान्ति नहीं पाता। मनु के जीवन में संकल्प-विकल्प की प्रधानता है, सुख और दुःख का संमिश्रण है। वह जीवन के किसी निर्णीत आधार को लेकर नहीं चला। अंत में प्रसादजी उसे श्रद्धा के अंचल में शान्ति देते हैं।"[i] राष्ट्र-निर्माण केवल राज्य या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों की सक्रिय सहभागिता की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य लोगों के बीच एकता, सहयोग, विश्वास और साझा पहचान को मजबूत करना है। नारी अपनी संवेदनशीलता, रचनात्मकता, सेवाभाव और नेतृत्व-क्षमता के माध्यम से राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। इस दृष्टि से श्रद्धा का चरित्र नारी की सृजनात्मक और समन्वयकारी भावना का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रसाद ने कामायनी में यह दिखाया है कि प्रलय के बाद जब मनु निराशा, अकेलेपन और मानसिक द्वंद्व से घिरे होते हैं, तब श्रद्धा उनके जीवन में आशा और प्रेम का संचार करती है। वह मनु को निराशा से उबारकर जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देती है –

एक झिटका-सा लगा सहर्ष, निरखने लगे लुटे-से, कौन –
गा रहा यह सुन्दर संगीत ? कुतूहल रह न सका फिर मौन।[ii]

इस पंक्ति में सृजनशीलता, संवेदनशीलता और सकारात्मक सोच को बढ़ावा दिया गया है। श्रद्धा के संगीत और सौंदर्य के माध्यम से मनु के भीतर जिज्ञासा और सकारात्मक भावों का जागरण दिखाई देता है। यहां श्रद्धा केवल मनु के व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है। वह प्रेम, सहयोग, करुणा और कर्म के माध्यम से जीवन को व्यवस्थित करने की प्रेरणा देती है।

श्रद्धा नारी की उस रचनात्मक शक्ति का प्रतीक है, जो परिवार, समाज और व्यापक रूप से राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है –

"कौन हो तुम वसंत के दूत विरस पतझड़ में अति सुकुमार !
घन-तिमिर में चपला की रेख, तपन में शीतल मंद बयार।[iii]

यहाँ मनु श्रद्धा को विपरीत परिस्थितियों में जीवन और नवचेतना का संदेश देने वाली शक्ति के रूप में चिह्नित करते हैं। वे श्रद्धा को पतझड़ में वसंत के दूत, अंधकार में प्रकाश और तपन में शीतल हवा के समान अनुभव करते हैं। श्रद्धा का यह स्वरूप परिवर्तन और नव-सृजन की प्रेरणा देता है।

वह समाज को निराशा और जड़ता से निकालकर सक्रियता, सृजन और विकास की ओर ले जाने वाली शक्ति के रूप में सामने आती है। इस दृष्टि से श्रद्धा का व्यक्तित्व राष्ट्र के पुनर्निर्माण में नारी की भूमिका को रेखांकित करता है।

श्रद्धा के प्रति मनु के मन में उत्पन्न आकर्षण केवल शारीरिक सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें जिज्ञासा और मानसिक आकर्षण का भाव भी निहित है। उसके सौंदर्य को देखकर मनु को मानसिक आनंद और शांति मिलती है। प्रसाद जी ने श्रद्धा के माध्यम से श्रृंगार और प्रेम को केवल शारीरिक आकर्षण के रूप में नहीं, बल्कि पवित्र और दिव्य भावनाओं के रूप में प्रस्तुत किया है। श्रद्धा का यह रूप महिला को केवल सौंदर्य की वस्तु न मानकर उसके व्यक्तित्व, विचार, बुद्धि और सृजनात्मक क्षमता को सम्मान देने की प्रेरणा देता है। इस दृष्टि से श्रद्धा आधुनिक नारी की गरिमा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक योगदान का प्रतीक बन जाती है।

एक दिन सहसा सिंधु अपार लगा टकराने नग तल क्षुब्ध,
अकेला यह जीवन निरुपाय आज तक घूम रहा विश्रब्ध।[iv]

ये पंक्तियाँ आज के व्यक्ति के अकेलेपन और मानसिक असुरक्षा की स्थिति को भी व्यक्त करती हैं। वर्तमान समय में मनुष्य अनेक सामाजिक संबंधों के बावजूद भीतर से अकेलापन अनुभव करता है। श्रद्धा का व्यक्तित्व नारी को केवल भावनात्मक सहारे तक सीमित न रखकर उसकी बौद्धिक और रचनात्मक क्षमता को स्वीकार करता है।

श्रद्धा नारी को सक्रिय सामाजिक भूमिका के लिए प्रेरित करती है। श्रद्धा केवल प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि सहचरी और सहधर्मिणी के रूप में सामने आती है। वह मनु के दुःख को समझकर उनके जीवन में सहयोग और सहभागिता का भाव उत्पन्न करती है। नारी की यही सहचर-भावना पारिवारिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक विकास और राष्ट्र-निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है—

"दव रहे हो अपने ही बोझ खोजते भी न कहीं अवलंब,
तुम्हारा सहचर बन कर क्या न उऋण होऊँ मैं बिना विलंब?"[v]

यहां श्रद्धा मनु के दुःख और अकेलेपन को समझकर उनका सहारा बनने की इच्छा व्यक्त करती है। वह नारी के सहयोग, कर्तव्यबोध, त्याग और सहभागिता की भावना का प्रतिनिधित्व करती है। नारी केवल परिवार तक सीमित न रहकर शिक्षा, समाज-सेवा, कर्म और सृजन के माध्यम से सक्रिय योगदान दे सकती है।

नारी परिवार, समाज और कार्यक्षेत्र के बीच **समन्वय स्थापित करने वाली महत्वपूर्ण शक्ति** है। वह विभिन्न विचारों, पीढ़ियों और सामाजिक वर्गों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देती है। नारी की संवेदनशीलता और सहिष्णुता परिवार तथा समाज में **सामंजस्य और एकता** को मजबूत करती है। शिक्षा, सामाजिक सेवा और सार्वजनिक जीवन में उसकी सक्रिय भागीदारी सामूहिक विकास को गति देती है। श्रद्धा का नारी-स्वरूप केवल सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें निःस्वार्थ सेवा और पूर्ण समर्पण की भावना भी दिखाई देती है। वह अपने सुख से अधिक दूसरे के जीवन और कर्तव्य को महत्त्व देती है। यही समर्पण-भाव परिवार से आगे बढ़कर समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करता है—

"समर्पण लो—सेवा का सार, सजल-संसृति का यह पतवार,
आज से यह जीवन उत्सर्ग इसी पल-पल में विगत-विकार।"[vi]

इन पंक्तियों में श्रद्धा के समर्पण और सेवाभाव की अभिव्यक्ति होती है। वह अपने जीवन को मनु के जीवन और कर्तव्य के साथ जोड़कर निःस्वार्थ भाव से साथ देने की इच्छा व्यक्त करती है। नारी का ऐसा समर्पण शिक्षा, सेवा, सामाजिक कार्य और सामूहिक उत्तरदायित्व के रूप में दिखाई देता है। इस दृष्टि से श्रद्धा निःस्वार्थ सेवा और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरक शक्ति के रूप में सामने आती है।

राष्ट्र निर्माण केवल भौतिक विकास से संभव नहीं होता, बल्कि उसके लिए मानवीय संवेदना, ममता और विश्वास जैसे मूल्यों की भी आवश्यकता होती है। श्रद्धा के चरित्र में ये मानवीय गुण अत्यंत स्वाभाविक रूप से दिखाई देते हैं। वह अपने स्नेह और संवेदना से मनु के जीवन को संबल प्रदान करती है—

दया, माया, ममता लो आज, मधुरिमा लो, अगाध विश्वास,
हमारा हृदय-रत्न-निधि तुम्हारे लिए खुला है पास।[vii]

इन पंक्तियों में श्रद्धा की दया, ममता, मधुरता और अटूट विश्वास का परिचय मिलता है। ये गुण व्यक्ति के भीतर मानवीय संवेदना और परस्पर विश्वास को विकसित करते हैं। आज नारी इन मूल्यों के माध्यम से परिवार, समाज और सार्वजनिक जीवन में सहयोग, सद्भाव और सामाजिक एकता को मजबूत करती है। इस प्रकार श्रद्धा मानवीय संवेदना और समन्वय के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की आधारभूमि तैयार करती है।

इस समय सामाजिक दृष्टि से श्रद्धा के व्यक्तित्व का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। आज का समाज वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी विकास और आर्थिक उपलब्धियों के बावजूद अनेक नैतिक एवं सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है। व्यक्तिगत स्वार्थ, उपभोक्तावादी मानसिकता, प्रतिस्पर्धा, अहंकार और संवेदनहीनता के कारण मानवीय संबंधों में आत्मीयता का अभाव दिखाई देने लगा है। ऐसे परिवेश में श्रद्धा का चरित्र मनुष्य को अपने आचरण का मूल्यांकन करने तथा जीवन में मानवीय गुणों को प्राथमिकता देने की प्रेरणा देता है। इस संबंध में तपेश्वर नाथ लिखते हैं – "कहना न होगा कि 'कामायनी' के जीवन, कार्यों, आदर्शों, गुणों और सिद्धियों द्वारा इस महाकाव्य के उक्त सभी ध्येयों की सिद्धि कराई गई है। वह पतिव्रता है, हिंसा-विरोधी है। काम के वासनात्मक उफान को दूर तक नकारती है। वह स्वार्थी, लोलुप, अहंकारी, कामी छली, निष्ठुर मनु के साथ रह कर भी अपने परोपकार, विनय, त्याग, सेवा, समर्पण, श्रद्धा, संयम, करुणा भरे स्वभाव तथा व्यवहार द्वारा 'असतो मा सद्गमय' का कांतासम्मित संदेश देती है। अखिल विश्व को अपना नीड़ समझना, विश्व-मंगल की कामना, द्वयता का परित्याग, स्वार्थी जग में सेवा-व्रत ले चलना, सबको संतोष-सुख बाँटना, सबकी दुःख-ज्वाला हरने की कामना, सभी स्थितियों में आनंद अनुभव करना आदि विभूतियाँ श्रद्धा ने अपने जीवन में प्राप्त किए हैं।"[viii]

कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद के कामायनी महाकाव्य में श्रद्धा का चरित्र प्रेम, करुणा, संवेदना, त्याग, सेवा और समन्वय जैसे मानवीय मूल्यों के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण में नारी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। श्रद्धा मनु के जीवन में आशा, विश्वास और नवीन चेतना का संचार करके यह स्पष्ट करती है कि जीवन की सार्थकता केवल व्यक्तिगत सुख की प्राप्ति में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवनको सकारात्मक दिशा देने में भी निहित है।

सन्दर्भ

1. वाजपेयी, नन्ददुलारे 'जयशंकर प्रसाद' (लोकभारती प्रकाशन) पृष्ठ संख्या – ७९-८०
2. प्रसाद, जयशंकर 'कामायनी' (अनुपम प्रकाशन) पृष्ठ संख्या - 27
3. वहीं, पृष्ठ संख्या - 28
4. वहीं, पृष्ठ संख्या - 29
5. वहीं, पृष्ठ संख्या - 31
6. वहीं, पृष्ठ संख्या -31
7. वहीं, पृष्ठ संख्या -31
8. तिवारी, मुक्तेश्वर नाथ, "विश्व भारती पत्रिका", 'जयशंकर प्रसाद विशेषांक' खण्ड ६२, अंक १-२,(अप्रैल २०१५- सितंबर २०१५) पृष्ठ संख्या- ४६

■■■